International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 802-803

विजय नगर कालीन संस्कृति

नरेन्द्र प्रताप सिंह यादव
सहा0 प्रोफेसर, इतिहास विभाग, राजकीय डिग्री कॉलेज, पुलवारा–बार, ललितपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

प्रान्त, विजयनगर, स्मृतिय एवं प्रशासन विजयनगर कालीन प्रशासन की जानकारी कृष्णदेवराय की तेलगू भाषा में मिली पुस्तक 'आमुक्तमलायद' से मिलती है। इससे पता चलता है कि प्रशासन का केन्द्र बिन्दु राजा था जिसकी सामान्य उपाधि 'राय' थी। राजा के बाद युवराज की महत्ता थी। उसका राज्याभिषेक 'युवराजपट्टाभिषेकम्' के नाम से प्रसिद्ध है। विजयनगर काल की सबसे बड़ी संस्था राजपरिषद थी जो राजा पर नियंत्रण रखने का कार्य करती थी जबकि राजा की सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद थी जिनके सदस्यों की आयु 50–70 वर्ष के बीच थी इनका प्रमुख महाप्रधानी कहलाता था। इसकी स्थिति वैसे ही थी जैसे की आगे चलकर शिवाजी के समय में पेशवा थी। इसीलिए इसे पेशवा का अग्रवर्ती कहा जाता है। विजयनगर काल में एक सचिवालय भी था जिसका उल्लेख अब्दुलरज्जाक ने किया है।

प्रांतीय प्रशासन

केन्द्र प्रान्तों में विभाजित था जिसे राज्य/मंडलम् कहा गया। इसमें मंडलम् शब्द अधिक प्रचलित था जबकि मंडलम से बड़े राज्यों को राज्य कहा जाता था। सामान्यतः प्रान्तों में युवराज की नियुक्ति होती थी। युवराज के न होने पर दण्डनायक अथवा नायक की नियुक्ति की जाती थी। सामान्यतः 6–8 प्रान्त थे परन्तु पॉयस के अनुसार कुल 200 प्रान्त थे। प्रान्त कमिश्नरियों में विभाजित थे जिन्हें वलनाडु कहा गया। वलनाडु जिलों कोट्टम और कोट्टम तहसील नाडु में विभाजित थे। नाडु मेलाग्राम में विभक्त थे। जिसमें लगभग 50 ग्राम शमिल थे प्रशासन की सबसे छोटी ईकाई उर/ग्राम थी। विजयनगर कालीन प्रशासन की महत्वपूर्ण विशेषता वहां की नयंकार और आयंगार व्यवस्था थी।

नयंकार व्यवस्था

विजयनगर काल में नगरों पर शासन करने के लिए नायंकारों की नियुक्ति की जाती थी। यह वस्तुतः भू–सामन्त जो सैनिक अथवा असैनिक कुछ भी हो सकते थे। उन्हें अमरम् नामक भूमि प्रदान की जाती थी। अमरम् भूमि ग्रहण करने के कारण इनका एक नाम अमरनायक पड़ गया धीरे–धीरे इनका पद आनुवांशिक होने लगा और ये उच्श्रृंखल होने लगे उनकी उच्श्रृंखलता को रोकने के लि ए अच्युत देवराय ने एक विशेष कमिश्नर महामंडलेश्वर की नियुक्त की।

आयंगर व्यवस्था

विजयनगर के शासक गांव में शासन करने के लिए आयंगारों को नियुक्त करते थे। इनका पद भी अनुवांशिक था। कुल 12 आयंगारों का उल्लेख मिलता है। इनमें से कुछ प्रमुख निम्नलिखित थे–

सेनतेओवा – गांवों का हिसाब–किताब रखने वाला।
तलर – गांव का चौकीदार अथवा कोतवाल।
विशिष्ट – वेगार या निःशुल्क श्रम लेने वाला अधिकारी।

सैन्य प्रशासन

विजयनगर काल में सैन्य विभाग को कन्दाचार कहा गया। इसके प्रमुख के पद पर दण्डनायकों की नियुक्ति की जाती थी। वैश्याओं से प्राप्त आय 'सोनम' से सैन्य विभाग और पुलिस विभाग का खर्च चलता था।

राजस्व प्रशासन

राज्य की आय का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत भू–राजस्व था जिसे शिष्ट कहा गया है। इसकी मात्रा 1/6, 1/3 के बीच थी। भू–राजस्व विभाग को अठवाने कहा जाता था। कृष्ण देवराय ने समस्त भूमि की माप कर उसे तीन भागों में विभाजित किया–

1. सिंचाई युक्त भूमि(दासबन्दा)
2. सूखी भूमि
3. बाग–बगीचों वाली भूमि

सिंचाई कर को दासबन्दा कहा जाता था। कहीं –कहीं इसके लिए कट्टूकोटेज शब्द प्रयोग किया गया।

सामाजिक दशा

विजयनगर कालीन समाज वर्ग प्रधान समाज था जिसमें निम्नलिखित महत्वपूर्ण वर्ग शामिल थे–

1. **ब्राह्मण वर्ग–** इसकी दशा सबसे अच्छी थी। अधिकांश उच्च पदों पर इसकी नियुक्ति की जाती थी परन्तु इसके खान–पान पर कोई प्रतिबन्ध न था और न ही इसे किसी कार्य के लिए मृत्युदण्ड दिया जा सकता था।
2. **चेट्टी/शेट्टी–** यह व्यापारिक वर्ग था। ब्राह्मणों के बाद इसी की दशा अच्छी थी।
3. **वीर पांचाल–** यह तीसरा वर्ग–दस्तकार वर्ग था जो व्यापारिक कार्य भी करता था। इसमें लोहारों की दशा सबसे अच्छी थी। लोहारो के बाद बढ़ई की महत्ता थी। कैकोल्लार अर्थात् बुनकर भी महत्वपूर्ण वर्ग था जो मंदिरों के पास रहता था और मंदिरों के प्रशासन में उसकी भूमिका थी। सदाशिवराय के काल में नाइयों की प्रतिष्ठा में वृद्धि हुई क्योंकि उन्हें व्यावसायिक कर से मुक्त कर दिया गया।
4. **देशरि/समयाचारी–** यह विशेष वर्ग था, जो सामाजिक और आर्थिक मामलों में अपना निर्णय देते थे।

5. **षड़वा–** जो लोग उत्तर से दक्षिण में आकर बस गये उन्हें षड़वा कहा गया।

दास प्रथा
विजयनगर काल में दास प्रथा प्रचलित थी जिसका उल्लेख निकोलोकोण्टी ने किया है।

स्त्रियों की दशा
विजयनगर काल में स्त्रियों की दशा अच्छी र्थी क्योंकि उनमें बाल–विवाह और पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था। लेकिन दहेज प्रथा और सतीप्रथा का प्रचलन था। देवराय–द्वितीय ने दहेज को अवैधानिक घोषित कर दिया। सती होने वाली स्त्रियों की स्मृतियों में पाषाण स्मारक बनाये जाते थे जिसे ''सतीकल'' कहा गया।

देवदासी प्रथा
प्रथा की शुरूआत गुप्तकाल में मंदिरों में हुई, विजयनगर काल में देवदासियों को भारतीय इतिहास में ज्यादा महत्व दिया गया।

वस्त्राभूषण
सामान्यतः लोग धोती और कुर्ता पहनते थे तथा जूतों की जगह चप्पल पहनते थे। स्त्री एवं पुरूष दोनेां आभूषण पहने थे युद्ध में वीरता वाले पुरूष पैरों में एक विशेष प्रकार का कड़ा धारण करते थे जिसे गंडप्रेद कहा गया।

शिक्षा एवं सिंचाई
सामान्यतः राज्य के अधीन शिक्षा व सिंचाई का विभाग नहीं होता था। इसमें निजी प्रयत्नों को प्रोत्साहन दिया जाता था। शिक्षा ब्राह्मणों के ग्रामों और मंदिरों में प्रदान की जाती थी। सिंचाई के साधनों में कुएँ, तालाब आदि का प्रयोग होता था परन्तु नहरों का अधिक उल्लेख नहीं मिलता।

मनोरंजन के साधन : ये निम्नलिखित है–
1. शतरंज– यहसबसे महत्वपूर्ण साधन था। कृष्ण देवराय स्वयं शंतरज के सबसे बड़ा खिलाड़ी थे। वह इस खेल को अनुदान भी देते थे।
2. यक्षगान– मूक अभिनय
3. वोमलाट– छाया नाटक
4. नवरात्रि पर्व– पॉयस ने उल्लेख किया।
5. कुश्ती– पॉयस ने उल्लेख किया।

आर्थिक दशा
विजयनगर काल में राज्य की आय का सबसे महत्वपूर्ण स्रोत भू–राजस्व था। इसे शिष्ट कहा गया और जिसकी मात्रा 1/6 एवं 1/3 के बीच थी यहाँ सिंचाई कर को दासबन्दा कहा जाता है। यहाँ प्रचलित कुछ प्रमुख भूमियों के प्रकार निम्नलिखित थे–

ब्रह्मदेय	– ब्राह्मणों को दी गयी कर मुक्त भूमि।
भंडारवाद भूमि	– राज्य के अधीन भूमि।
ऊँबलि	– राज्य द्वारा विशेष सेवा के बदले में दी गयी कर मुक्त भूमि।
रत्नकोड़गै/खत्तकोड़गै	– युद्ध में शौर्य प्रदर्शन करने वाले लोगो को दी गयी कर मुक्त भूमि।
अमरम्	– नाइको को दी गयी भूमि।
वारम व्यवस्था	– पट्टेदार और भू–स्वामी के बीच उपज की हिस्सेदारी।

सिक्के
विजयनगर के शासको ने सोने, चाँदी और ताँबे के सिक्के चलाये उनके स्वर्ण सिक्कों पर वाराह, चाँदी के सिक्कों को तार और ताँबे के सिक्कों को जीतल कहा गया। वाराह को भी विदेश पगोड़ा आदि नामों से पुकारते थे। कृष्ण देवराय के सिक्कों पर वेंकेटश, गरूड़ आदि की आकृतियाँ मिलती है।

व्यापार और वाणिज्य
विजयनगर में भारत का व्यापार पूर्तगाल, अफ्रीका, अरब, चीन, दक्षिण पूर्व एशिया श्रीलंका आदि देशों के साथ था। यहाँ से निर्यात की जाने वाली वस्तुओं में कपड़ा, मसाला, नील, मोती आदि प्रमुख थे। उन्हीं व्यापारियों में गांधिको अर्थात इत्र व्यापारियों का विशेष उल्लेख है। बाहर से आयात की जाने वाली वस्तुओं में घोड़ा, मदिरा, चीनी रेशम, मोती आदि वस्तुये प्रमुख थी। यह व्यापार विजयनगर के पक्ष में था।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि विजयनगर कालीन संस्कृति बहुत ही विकसित दशा में थी।

सन्दर्भ

1. टी.वी. महालिंगम
   - एडमिनिस्ट्रेशन एण्ड सोशल लाइफ अंडर विजयनगर
   - इकोनॉमिक लाइफ इन द विजयनगर एम्पायर
2. एच.जी. सेवेल
   - ए फॉरगेटेन एम्पायर
3. एम.एच.आर. शर्मा
   - द हिस्ट्री ऑफ द विजयनगर एम्पायर, टवस. ए प्प
4. के.ए. नीलकान्त शास्त्री
   - ए हिस्ट्री ऑफ साउथ इण्डिया
5. एच. हीरस
   - साउथ इण्डिया अंडर द विजयनगर एम्पायर टवस. प्
6. राधे श्याम चौरसिया : हिस्ट्री ऑफ मीडिवल इण्डिया (1000–1707 ।क्)